प्रायद्वीपीय भारत की मुख्य नदियां (Main Rivers of Peninsular India)

निम्नलिखित प्रायद्वीपीय भारत की मुख्य नदियाँ हैं, जिन्हें *चित्र 3.10* में दिखाया गया है:

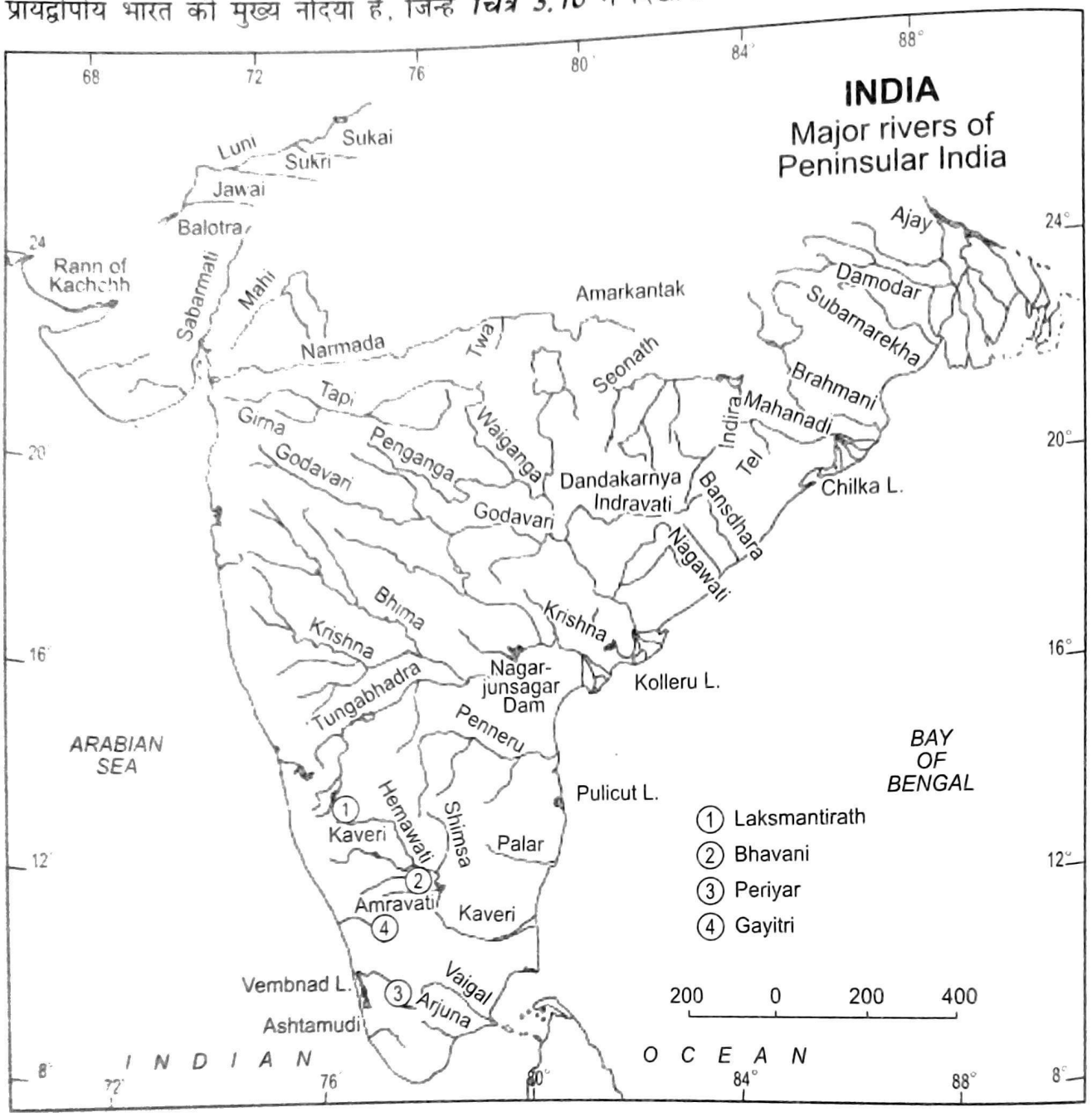

Map not to Scale

चित्र 3.10 प्रायद्वीपीय भारत की प्रमुख नदियां

लूनी नदी

लूनी नदी अजमेर के निकट अरावली श्रेणी से निकलती है तथा इसके मार्ग तट में अनेक सहायक नदियाँ जैसे बांदी सूकरी तथा जवाई आकर मिलती है। वे नदिया जो अजमेर से दक्षिण अरावली श्रेणी के पश्चिमी पार्श्व को अपवाहित करती है, मौसमी नदियाँ होती है। लूनी नदी बालोतरा के नीचे खारी हो जाती है तथा दक्षिण की ओर कच्छ की दलदल भूमि (रन ऑफ कच्छ) में जाकर समाप्त हो जाती है।

बनास नदी (Banas River)

यह नदी माउन्ट आबू से निकलती है तथा पालनपुर होकर बहते हुए कच्छ की दलदल भूमि में जाकर फैल जाती है।

साबरमती नदी (Sabarmati River)

यह नदी अरावली श्रेणी के दक्षिणी ढलान को अपवाहित करती है। इस नदी का एक संकीर्ण लम्बा बेसिन है, जिसका क्षेत्रफल 21,700 वर्ग कि.मी. है। साबरमती में सहायक नदिया इसके पूर्वी पार्श्व में आकर मिलती है तथा यह नदी खम्भात की खाड़ी में मिलने से पहले लगभग एक उत्तरी दक्षिणी मार्ग में बहती है।

माही नदी (Mahi River)

माही नदी का स्रोत मध्य प्रदेश की विंध्य पहाड़ियों में है। यह दक्षिण-पश्चिम की ओर आनन्द तथा बांसवाड़ा जिले से होकर गुजरती है तथा अन्ततः एक मुहाना बनाकर खभात की खाड़ी में अपना जल गिराती है।

पश्चिमी घाट के पश्चिम-मुख कगार को ज्यादातर अपवाहित करने वाली नदियाँ विशेषकर कोंकण तटीय क्षेत्र में छोटी होती है तथा एक आर्द्र उष्ण-कटिबंधीय भूदृश्य में समुद्री सतह से 100 से 280 मीटर ऊपर संकीर्ण से लेकर चौड़ी V-आकार की घाटियों में तीव्र गति से बहती है। इन नदियों की अपरदन क्षमता अधिक होती है। ये जल अपवाह के एक समानान्तर प्रतिरूप को प्रदर्शित करती है, जिसकी विशेषता तीक्ष्ण मोड़ होती है तथा ये अरब सागर में मुहाना (Esturary) बनाकर प्रवेश करती हैं। पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढाल को अपवाहित करने वाली नदियों में-उल्हास, सावित्री, वशिष्ठ, नेत्रवती, पेरियार तथा पामबियार मुख्य है। इनमें से कुछ नदियाँ गहरे महाखड्डों से नीचे की ओर उतरते हुए जलप्रपात तथा क्षिप्तिकाएं (Rapids) बनाती है।

शरावती नदी (Sharavati River)

यह नदी कर्नाटक के शिमोगा जिले से निकलती है तथा गारसोपा जलप्रपात उत्पन्न करती है, यह भारत का सबसे भव्य जलप्रपात है जो 'जोग' जलप्रपात (271 मीटर) के नाम से प्रसिद्ध है। पश्चिमी घाट के अखण्ड जलविभाजक में एकमात्र दर्रा 13 कि.मी. चौड़ा पालाक्कड़ (Palakkad) दर्रा है, जिसे पालघाट भी कहते हैं। पोन्नानी नदी जो इस दर्रे से होकर पश्चिम की ओर बहती है एक अनुपयुक्त नदी प्रतीत होती है।

नर्मदा नदी (Narmada River)

नर्मदा नदी (लम्बाई 1300 कि.मी., अपवाह बेसिन 98,800 वर्ग कि.मी.) छत्तीसगढ़ के मैकाल पहाड़ियों में अमरकंटक पठार से निकलती है। इसका पश्चिमी दिशा में यह नदी जबलपुर के निकट एक जटिल मार्ग से होकर गुजरती है। नर्मदा नदी कुछ प्रभावशाली महाखड्डों से होकर गुजरती है, जिसमे सबसे भव्य है -जबलपुर के निकट धुंआधार जलप्रपात। जबलपुर से पश्चिम की ओर बढ़ते हुए यह नदी विन्ध्य तथा सतपुड़ा श्रेणियों के बीच एक विभ्रंश घाटी (Rift Valley) से होकर गुजरती है। इस नदी की घाटी में समृद्ध जलोढ़ निक्षेप होते हैं। अन्ततः यह भरूच (Bharuch) से आगे चौड़ी हो जाती है तथा एक 27 कि.मी. चौड़ा मुहाना (estuary) बनाकर खंभात की खाड़ी (अरब सागर) में प्रवेश करती है।

तापी नदी (Tapi River)

इसकी लम्बाई 700 कि.मी. तथा अपवाह बेसिन 66,900 वर्ग कि.मी. है। तापी नदी सतपुड़ा श्रेणी से निकलती है तथा सतपुड़ा के समानान्तर पश्चिम की ओर बहती है। खंडवा-बुरहानपुर दर्रे के निकट नर्मदा तथा तापी एक-दूसरे के करीब आ जाती हैं। जलगाँव के नीचे यह नदी नर्मदा की ही तरह विभ्रंश घाटी (Rift valley) में बहती है लेकिन उत्तर में सतपुड़ा श्रेणी तथा दक्षिण

में अजन्ता श्रेणी के बीच एक अत्यन्त संकुचित रूप में बहती है। सूरत शहर के नीचे यह एक मुहाना (Estuary) बनाती है तथा खंभात की खाड़ी में जा मिलती है।

प्रायद्वीपीय भारत की पूर्व की ओर बहने वाली नदियां (Easterly Rivers of Peninsular India)

अनेक नदियां छोटानागपुर पठार से निकलती है तथा बंगाल की खाड़ी में जाकर मिलती हैं। छोटानागपुर पठार से निकलने वाली नदियों में स्वर्णरेखा तथा ब्राह्मणी सबसे महत्वपूर्ण है, जो बंगाल की खाड़ी में जाकर मिलती हैं।

स्वर्णरेखा नदी [Swarn-Rekha River]

(लम्बाई 400 कि.मी., बेसिन 28,000 वर्ग कि.मी.): यह नदी राँची के दक्षिण पश्चिम में निकलती है, जहां इसके अनेक जलप्रपात है। पूर्वी दिशा में बहते हुए यह जमशेदपुर से होकर गुजरती है तथा बालासोर के निकट बंगाल की खाड़ी में जाकर मिलती है। इसका अपवाह बेसिन झारखण्ड, ओडिशा तथा प. बंगाल राज्यों में फैला हुआ है।

तालिका 3.4 प्रायद्वीपीय भारत की मुख्य नदियाँ

नदी	स्रोत	लम्बाई (कि.मी.)	मुख्य सहायक नदियाँ
1. गोदावरी	त्रियम्बक पठार नासिक के (महाराष्ट्र)	1465	साबरी, इंद्रावती, पेनगंगा, वर्धा, प्राणहिता, पूर्णा, वेनगंगा, मंजरा, तृणा मोहर
2. कृष्णा	महाबलेश्वर के नजदीक (महाराष्ट्र)	1400	मूसी, मुनेरू, कोयना, भीमा, घाटप्रभा, माल प्रभा, तुंगभद्रा,
3. नर्मदा	अमरकंटक	1310	हिरण, ओरसांग, बर्ना, कोलार, बुरहनार, तावा, कुंडी
4. महानदी	दंडाकारण्य पठार (रायपुर के निकट)	857	इब, मंद, हासदेव, शियोनाथ, ओंग, जोंक, तेल
5. कावेरी	ताल कावेरी	800	हेरांगी, हेमवती, लाकंपावणी, शिमसा, अर्कावाती, कबानी, भवानी, अमरावती लक्ष्मण-तीर्थ, सुवणीवती
6. तापी	बैतूल जिले में मुल्ताई (म.प्र.)	730	पूर्णा, बेतूल, पाटकी, अरुणावती, गांजल, धातरंज, अनेर, बोकाड, मोन, गुली

ब्राह्मणी नदी [(Brahmani River) (लम्बाई – 420 कि. मी.)]

यह नदी कोयल तथा शंख नदियों के संगम से बनती है। ये नदियाँ राउलकेला में जाकर मिलती हैं तथा गढ़जात पहाड़ियों के पश्चिमी भाग का अपवाहित करती है। यह नदी बोनाई, तलचर एवं बालासोर जिलों से होकर गुजरती है तथा बंगाल की खाड़ी में पारादीप बंदरगाह के ऊपर जाकर मिलती है। उत्तर में वेतरणी नदी होने के कारण भद्रक के नीचे एक डेल्टा क्षेत्र का निर्माण होता है।

महानदी [(Mahanadi River) महानदी (लम्बाई – 885 कि.मी., बेसिन – 141,600 वर्ग कि.मी.)]

ओडिशा तथा छत्तीसगढ़ की सबसे प्रमुख नदी है। यह छत्तीसगढ़ बेसिन से निकलती है तथा रायपुर के पूर्वी एवं पश्चिमी भाग का अपवाहित करती है। अपने शुरूआती चरण में यह नदी उत्तर पूर्व की ओर बहती है तथा दोनों तटों पर अनेक नदियों, उदाहरण के लिए शिवनाथ तथा सदू के मिलन के बाद (200 से 700 मीटर की ऊँचाई के मध्य) संयुक्त रूप से जल का निकास पूर्व की ओर एक महाखड्ड (Gorge) के द्वारा होता है, यहां जल को अवरुद्ध कर हीराकुड बाँध का निर्माण किया गया है। बाँध के कुछ ही नीचे सम्बलपुर में नदी पूर्व की ओर मुड़ जाती है तथा पूर्वी घाट से होकर बंगाल की खाड़ी में अपने डेल्टा में अनेक वितरिकाओं के द्वारा प्रवेश करती है। कटक शहर महानदी डेल्टा के शीर्ष पर स्थित है।

गोदावरी नदी [(Godavari River) (लम्बाई – 1465 कि.मी., बेसिन – 3 12,800 वर्ग कि.मी.)]

गोदावरी प्रायद्वीपीय भारत की सबसे बड़ी नदी है। यह पश्चिमी घाट में नासिक के निकट एक झरने से निकलती है तथा पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी महाराष्ट्र, बस्तर पठार (छत्तीसगढ़) तथा तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के क्षेत्र को अपवाहित करती है। इसकी अनेक सहायक नदियाँ हैं, विशेषकर इसके बाएँ तट पर, जैसे–पूर्णा, मनेर, पेनगंगा, प्राणहिता (वेनगंगा तथा वर्धा संयुक्त रूप से), इन्द्रावती, ताल तथा साबरी। दाहिने तट की सबसे प्रमुख सहायक नदी है–मंजिरा। इन्द्रावती तथा साबरी पूर्वी घाट के पश्चिमी ढाल से निकलती है लेकिन वे क्रमशः पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व की तरफ बहती हैं। इन्द्रावती के साथ संगम के बाद यह पूर्वी घाट के एक सुरम्य महाखड्ड (Gorge) से होकर गुजरती है। राजमुंद्री के नीचे यह एक वृहत सम्मित डेल्टा का निर्माण करती है तथा बंगाल की खाड़ी में तीन मुख्य जल धाराओं के द्वारा प्रवेश करते हैं। गोदावारी की डेल्टा की विशेषता अनेक पुरा-नहरें तथा लैगूनों (अनूप) से जुड़े हुए मैंग्रोव (गराना) हैं। काकीनाड़ा के दक्षिण-पूर्व में स्थित कोलेरू झील एक ऐसी ही अन्तःस्थलीय लैगून (Lagoon) है।

कृष्णा नदी [(Krishna River) (लम्बाई: 1290 कि.मी., बेसिन: 259,000 वर्ग कि.मी.)]

कृष्णा नदी का उद्गम महाबलेश्वर के निकट पश्चिमी घाट के उदग्र पार्श्व में है। अनेक छोटी नदियाँ, जैसे-कोयना (Koyna) तथा घाटप्रभा कृष्णा नदी में आकर मिलती हैं, जिससे उसे एक अधःवृक्षारूपी प्रतिरूप प्राप्त होती है। उत्तर में भीमा तथा दक्षिण में तुगभद्रा इसकी अन्य सहायक नदियाँ हैं। नीचे की ओर क्वार्ट्जाइट कगार (quartzite scarp) से गुजरते हुए कृष्णा नदी को अवरुद्ध कर (बांध बनाकर) नागार्जुन सागर जलाशय का निर्माण किया गया है। पूर्व की ओर, विजयवाड़ा के नीचे श्री सैलम पहाड़ियों में महाखड्ड के आगे यह नदी पक्षी के पंजे के आकार के उर्वर डेल्टा (Birds Foot Delta) का निर्माण करती है।

पेन्नार नदी (Pennar River)

यह नदी दक्षिण मैसूर पठार के कोलार जिले से निकलती है। इसकी मुख्य सहायक नदियाँ चित्रावती तथा पापाघनी है। यह कुडप्पा क्वार्ट्जाइट के एक महाखड्ड से होकर गुजरती है तथा बंगाल की खाड़ी में एक मुहाना (Estuary) के रूप प्रवेश करती है।

कावेरी नदी (Kaveri River) (लम्बाई – 765 कि.मी., बेसिन – 87,990 वर्ग कि.मी.)

कावेरी नदी गंगा की ही तरह एक पवित्र नदी है। इसलिए इसे 'दक्षिण की गंगा' भी कहा जाता है। यह मैसूर पठार के दक्षिणी भाग में एक पथरीली पर्वतीय नदी के रूप में निकलती है तथा क्षिप्तिकाओं (Rapids) एवं जलप्रपातों का निर्माण करती है। इसका अपवाह बेसिन ग्रीष्मकालीन मानसून, पश्चगमन मानसून तथा शीतकालीन मानसून के दौरान वर्षा प्राप्त करती है। मैसूर से 20 कि.मी. ऊपर इस नदी पर बाँध बनाकर कृष्णा सागर जलाशय का निर्माण हुआ है। यह श्रीरंगापट्टनम तथा शिवसमुद्रम द्वीप से होकर गुजरती है। शिवसमुद्रम के चारों ओर नहरें क्षिप्तिकाओं (Rapids) के एक अनुक्रम का निर्माण करती हैं, जिन्हें उपयोग कर जल बिजली संयन्त्र का विकास 1902 में किया गया। द्वीप के नीचे यह नदी रमणीय महाखड्डों (Gorge) के एक क्रम से होकर आगे बढ़ती है जहाँ अनेक कैंची-मोड़ होते हैं। इस प्राकृतिक भूदृश्य को हैगनकाल प्रपात (Hagenkal Fall) कहते हैं जहाँ इस नदी के पठार मार्ग का लगभग अन्त हो जाता है। डोडाबेटा चोटी (2636 मीटर) के पूर्व में नीलगिरि पर्वत में एक अन्य संकीर्ण महाखड्ड (Gorge) है, जिसे भवानी तथा उसकी सहायक-नदी मोयार अपवाहित करती है, जो मैटूर बांध के लिए स्थान प्रदान करते हैं। कोयम्बटूर बेसिन को अपवाहित करते हुए कावेरी, भवानी नदी से संगम के बाद मैदान क्षेत्र में प्रवेश करती है। तिरुचरापल्ली से कुछ कि.मी. ऊपर यह नदी बिखर कर तमिलनाडु के थंजावुर जिले में क्वाड्रैंट (चतुर्थांश) डेल्टा का निर्माण करती है।

अमरावती नदी (Amravati River)

अमरावती, कावेरी नदी की सहायक नदी है। इसका उद्गम केरल और तमिलनाडु की सीमा पर है तथा इसकी लंबाई 175 किमी. है। यह करूर जिले में कावेरी से मिलती है तथा कोयम्बटूर जिले में 60,000 एकड़ भूमि की सिंचाई करती है। इसके बेसिन में काफी औद्योगीकरण हुआ है, जिस कारण इसके जल का उच्च प्रदूषण हुआ है।

ब्राह्मणी नदी (Brahmani River)

तिरुनिवेली जिले की नदी। यह पश्चिम घाट के पालनी पहाड़ियों के ढाल से निकलती है तथा मदुरई से गुजरती है। रामनाथपुरम प्रायद्वीप से होकर यह नदी मन्नार की खाड़ी में जाकर मिलती है।

प्रायद्वीपीय तथा अतिरिक्त-प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना

प्रायद्वीपीय नदियाँ	अतिरिक्त – प्रायद्वीपीय नदियाँ
1. प्रायद्वीपीय भारत की नदियाँ अधिक पुरानी हैं। इनमें से कुछ कैम्ब्रियन पूर्व (Precambrian) काल के पहले की है।	1. अतिरिक्त-प्रायद्वीपीय भारत (Extra-Peninsular River) की नदियाँ युवा नूतन नदियाँ हैं केवल कुछ पूर्ववर्ती नदियों (Antecedent Rivers), जैसे-सिन्धु, गंगा, ब्रह्मपुत्र, इत्यादि को छोड़कर।
2. अधिकांश नदियाँ अनुवर्ती (Consequent) अथवा पुनर्यौवन (Rejuvenated) नदियां है।	2. इनमें से कई नदियाँ, जैसे-सिन्धु, सतलज, काली, कोसी, तीस्ता, ब्रह्मपुत्र, प्रत्यनुवर्ती नदियाँ हैं।
3. गोदावरी नदी को छोड़कर इनके बेसिन क्षेत्र छोटे है।	3. इन नदियों के बेसिन प्रायः बड़े है।
4. इन नदियों का जलमार्ग (Channel) चौड़ा है।	4. इन नदियों का नदी तल ऊपरी धारा में महाखड्डों (Gorges) तथा क्षिप्तिकाओं (Rapids) का निर्माण करता है।
5. ऊर्ध्वाधर अपरदन (Vertical erosion) नगण्य है।	5. दोनों, ऊर्ध्वाधर (Vertical) तथा पार्श्विक (Lateral) अपरदन महत्वपूर्ण हैं।
6. ये नदियाँ धीमी गति से बहती हैं।	6. ये नदियाँ दोनों, तीव्र तथा मंद गति से बहने वाली हैं।
7. इन नदियों की वहन क्षमता निम्न है।	7. ये नदियां अधिक मात्रा में अवसादों (Sediments) का वहन करती हैं।
8. ये नदियाँ मुख्यतः निक्षेपण (Depositional) की कारक (ऐजेन्ट) हैं।	8. ये नदियाँ सक्रिय रूप से अपरदन तथा निक्षेपण (Deposition) की कारक (ऐजेन्ट) हैं।
9. ये नदियाँ छिछला विसर्पण (Meanders) बनाती हैं।	9. मैदानी क्षेत्र में ये नदियाँ अनेक तीक्ष्ण तथा गोखुर झीलें (Ox bow lakes) बनाती हैं।
10. ये नदियाँ सामान्यतः नौगम्य (Navigable) नहीं हैं।	10. अधिकांश ये नदियाँ मैदानों में नौगम्य होती हैं।
11. ये अधिकतर मौसमी नदियाँ होती हैं।	11. ये नदियाँ चिरस्थायी (Perennial) होती हैं।
12. अधिकांश नदियों का उदगम् पश्चिमी घाट तथा पठार-क्षेत्र से होता है।	12. अधिकांश नदियाँ हिमालय में हिमनदों (Glaciers) से निकलती हैं।
13. अधिकांश नदियाँ जीर्ण (Senile) नदियाँ हैं।	13. अधिकांश नदियाँ परवर्ती तरुणावस्था (Youth Stage) में हैं।
14. ये नदियां सरिता अपहरण (River Piracy) नहीं करती।	14. नदी अपहरण (River Capture) एक सामान्य घटना है।
15. इन नदियों का उपयोग जल-बिजली संयन्त्रों के लिए किया जाता है, उदाहरण के लिए हीराकुड, कोयना तथा नागार्जुन सागर।	15. इन नदियों पर अनेक बहुउद्देशीय योजनाएँ हैं, उदाहरण के लिए भाखड़ा, टिहरी एवं सलाल परियोजनायें।
16. ये नदियाँ डेल्टा (जैसे-गोदावरी, कृष्णा, कावेरी) तथा मुहाना (जैसे-नर्मदा, ताप्ती) का निर्माण करती हैं।	16. ये नदियाँ केवल डेल्टा का निर्माण करती हैं। गंगा का सुन्दरबन डेल्टा विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है।
17. इनका जलमार्ग आधार तल (Base Level) के करीब है।	17. ये नदियां अपनी युवावस्था के अंतिम चरण में हैं। अपने पर्वतीय मार्ग मे इनके द्वारा सरिता अपहरण किया जाता है।